

पैसि में पच्चीस साल बित गये थे। चित्रकला को समझने के लिये, चित्र बनाने में बहुत समय लगा। कुछ सफलता भी मिली पर मैं सन्तुष्ट न था। चित्रों में कुछ कमी लगती थी। हाँ, रेखाओं को, रंगों को, रूप को उभरते देखा, इनका महत्व ठीक से समझा, पर लगा कि देश की महान सांस्कृति को, विदेश में, भूल रहा था। वैसे तो, मैंने देश से सदैव गहरा सम्बन्ध बनाए रखा था, अपनी भाषा नहीं भूला, पर लगा कि अब फिर से देखने, सोचने, समझने की जरूरत है। भाग्यवश, उसी समय देश का निमंत्रण मिला, पटना में। यह था पत्र - अशोक वाजपेयी जी का, जो उस समय मध्य प्रदेश कला परिषद के प्रमुख थे और भोपाल में मध्य प्रदेश शासन के सांस्कृतिक विभाग के सचिव थे। मानिये, मुझे हादिसि कौशी हुई। मेरे लिये यह देवकृपा ही थी। उन्होंने मुझे बुलाया - भोपाल - चित्रों के साथ "उत्सव" मिलन, जागृति, सुख, आनन्द के लिये मध्य प्रदेश में ही - जहाँ मैं जन्मा और जहाँ मेरा बचपन और युवावस्था बीती।

मैं लुरन्त ही आया। हम अपने पुराने मित्रों से मिले। नये कलाकारों से भी पहचान हुई। संगीत, नृत्य, गायन, कविता, कला हर ओर थी। लेखक, कवि अपनी कविताएँ सुनाते - चित्रों के बीच - मैं पहली बार जगज्ज बन्दु से मिला, इनका शहरीय स्वर सुना। साथ ही थे स्वामीनाथन, सचु सेंना, प्रसाद कुंज, मृणाल पांडे, अपिलेश और भी कई युवा चित्रकार जिनसे मिला, चित्र देखे। मैंने धरती को नमस्कार किया, भीम बेटका गंगा, हरे श्वेत और सुन्दर पहाड़ियों को देखकर लगा कि कितनी सम्भावनाएँ हैं देश में, हम इसे समझते हैं और अपनी सारी शक्तियों से आधुनिक भारत की सांस्कृति को और भी आगे बढ़ाना है।

बहुत मुझ से मैं गया नरसिंह पट, कर्पेया, बवरीया, मंडला, दमेह।



गांवों में, बसंतों में, पहाड़ों में, जंगलों में। यों से अशोक के शब्दों में कहा - "औं, लौटकर जब आऊंगा, नया लौऊंगा - यात्रा के बाद की ध्यान -।"

स यात्रा में, नई शक्तियां मिलीं, नये विचार आये, भारतीय शिल्प, जला का दिसे आश्चर्य किया। प्रश्न था - इन्हे अपने चित्रों में किस प्रकार से ला सकें कि फ्रांस में बनाए चित्रों में अन्तर्भूति अन्तर, भारतीय ही रहे। हां हमें बीसवीं शताब्दी में यूरोप से, इसासे, बहुत कुछ लेना है, यह स्वीकार है। पर हमें अपनी परम्परा, अपने मूलभूतों को भूलना नहीं है। मैं उही केन्द्रों की ओर गया जो महत्वपूर्ण लगे, हिन्दी पुस्तकें, भगवत गीता, आचार्य विनोबा भावे, सन्त ज्ञानेश्वर, महात्मा गांधी, हिन्दी कविताएँ सर्वसुद्ध लेकर फिर लौटा।

अशोक को भी पैसे जुनाया, फिर शोरचियों - दक्षिण फ्रांस में बोला सा गांव महाद्वय हा साल तीन चार माह रहते थे। ये अविन्या फ्रेस्टवल में भी विशेष रूप से आमंत्रित किये गये। इनकी कविताएँ, भारतीय संगीत नृत्य, - प्रेरणा श्रीमाली - आठ दस दिन का भारतीय समारोह। सैंकड़ों लोग आये। आज फल, फ्रांस में भी भारतीय संस्कृति प्रमुख भावी जा रही है। अशोक की कविताओं का अनुवाद - मास्को, वॉलेन्ड, लन्दन, पेरिस में भी किया जा रहा है। इससे अन्तर्गत, चित्र का भी अपने चित्र प्रदर्शित का रहे हैं। आवश्यकता है, अलमल कठोर अर्थ और कार्य-लक्ष्य, एकाग्रता की।

मोघल में ही पहला महत्वपूर्ण आधुनिक कला प्रेक्ष "भारत भवन" अशोक की कल्पना और विचारों से बना। चार्ले कोरिया ने इसे बहुत सुन्दर रूप दिया आशा है कि इस भविष्य में - एक नया केन्द्र बना सकेगा - दिल्ली के पास ही - जिसमें अशोक, आविर्भाव, मनीष और हम सब का सहयोग अनिवार्य है।

आज, हमारे "उज्जैन महोत्सव" के लिये - मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ -

